ई–बुलेटिन

कृषिउद्यमी

प्रतीयमान अनुभव को बांटने वाला मंच

खंड V अंक 7

अक्तूबर 2013

प्रत्येक कृषक द्वारा बेहतर कृषि

'ग्रीन गोल्ड' बाँस : निर्माण में एक महत्तवपूर्ण परिवर्तन

इस अंक में :

- **माह का कृषिउद्यमी** :श्री अरुण आई. वांड्रे
- **माह का संस्थान** :आईएसएपी पंजाब
- **रिफ्रेशर प्रशिक्षण कार्यक्रम** :बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, रांची, झारखंड

कृषिउद्यमी, मुफ्त हेल्पलाइन का उपयोग करें - 1800 –425-1556

" कृषि उद्यमिता एक ऐसा प्रतीयमान मंच है जहां कृषि उद्यमियों, बैंकरों, कृषि व्यवसाय कंपनियों, नोडल प्रशिक्षण संस्थानों, विस्तार कार्यकर्ताओं, शिक्षाशास्त्रियों, अनुसंधानकर्ताओं तथा कृषि व्यवसाय चिंतकों, जो देश में कृषि उद्यमिता विकास के लिए कार्य कर रहे हैं, के अनुभवों को सबके साथ बांटा जाता है।

बाँस को बहुत अनुकूल विशेषताओं के साथ गैसीकरण और पेट्रोल एवं डीजल के संश्लेषण के लिए विश्व के सबसे तेज उगने वाले पौधे की प्रजाती माना गया है। बाँस में कम राख की मात्रा और क्षार तालिका के रूप में वांछनीय ईंधन जैसी कई विशेषताओं हैं। इसका ताप कृषि अवशेष, घास और भीसे की तुलना में अधिक है। इसके अलावा, बांस में उच्च बायोमास यानि जैव ईंधन उत्पादकता है और अन्य जैविक ईंधन संसाधनें में यह सबसे अच्छा माना जाता है।

श्री वांड्रे के के बांस वृक्षारोपण का दौरा करते हुए प्रो. चुनाले, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र (एग्री.), कोल्हापुर)

महाराष्ट्र के कोल्हापुर जिले के उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में बांस की खेती को बढ़ावा देने के लिए "ईश्वर कृषि व्यवसाय और ऊर्जा समाधान" ग्रीन गोल्ड - बांस की वैज्ञानिक खेती पर परामर्श प्रदान करने वला एक कृषिउपक्रम है। फर्म के संस्थापक 42 वर्षीय श्री. अरुण ईश्वर वान्ड्रे, एक कृषि स्नातक है। अपनी स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद वे परंपरागत कृषि से जुड गए। गन्ना, ज्वार, मिर्च आदि प्रमुख फसलें थीं।

श्री. वांड्रे का मानना हैं "पारंपरिक खेती प्रणाली प्रतिदिन के खर्चों को पूरा नहीं कर सकती और बाजार में लगातार उतार-चढ़ाव की वजह से खेती हमेशी से घटे में रही है।" ऐसी परिस्थितियों में उन्होंने बाजार के नेतृत्व वाली उद्यम के साथ स्वयं को वैज्ञानिक कृषि में शामिल करने का फैसला लिया। कृषि स्नातक होने के कारण उनके पास खेती-बाड़ी का ज्ञान तो था, लेकिन वे ऐसे मंच की तलाश में थे, जिसमें ज्ञान का मिश्रण व्यवसाय प्रबंधन के साथ किया जा सके। संयोग से उनकी निगाह एक विज्ञपन पर पड़ी, जिसमें कृषि व्यवसायिकों को एसी और एबीसी पिरयोजना के अंतर्गत प्रशिक्षण के लिए आमंत्रित किया गया था।

वर्ष 2011 में अनुविक्षण यानि स्क्रीनिंग परीक्षा पास की और सांग्लि, महाराष्ट्र के कृष्णा वैली एडवांस एग्रीकल्चर फाउंडेशन में 60 दिवसीय एसी एवं एबीसी आवसीय प्रशिक्षण हासिल किया। श्री. वांड्रे कहते हैं कि, एसी एवं एबीसी प्रशिक्षण से उन्हें व्यपार प्रबंधन, बाजार सर्वेक्षण, लागत और लेखा, संचार, जोखिम लेने की योग्यता इत्यादि में मदद मिली। इसके अलावा उन्होंने कृषिउद्यम स्थापित करने के लिए क्षेत्र का दौरे पर ज़ोर दिया जिसने उन्हें एक उद्यमी बनने और कृषि समुदाय को सेवाएं प्रदान करने के लिए प्रेरित किया।

एसी एवं एबीसी प्रशिक्षण के सफल समापन के बाद श्री वांड्रे ने पारंपरिक फसल प्रणाली को बदलने का फैसला किया और वैकल्पिक फसलों की खोज की।कई किस्मों के विकल्पों का अध्ययन करने के बाद, उन्होंने बांस को चुना। वे आश्वस्त थे कि बांस बंजर भूमि में सबसे उपयुक्त फसल होगी। उन्होंने कोल्हापुर जिले के बाजार का सर्वेक्षण और पारिस्थितिक स्थिति का अध्ययन किया।

तत्पश्चात् उन्होनें अपनी 10 एकड़ भूमि पर बांस का प्रदर्शन प्लाट तैयार किया और "ईश्वर कृषि व्यवसाय और ऊर्जा समाधान" के नाम से अपनी फर्म पंजीकृत की। उन्होंने शुरुआती पहल करते हुए किसानों के एक छोटे समूह को इकट्ठा किया और उन्हें बांस की खेती के बारे में जानकारी दी। किसानों को बांस की खेती के प्रति सुग्राही बनाना आसान काम नहीं था, उन्हें बांस की खेती और इसके जैव ऊर्जा क्षमता के महत्व का एहसास करने के लिए किसान सम्मेलन और दौरों की एक श्रृंखला आयोजित की।

"ईश्वर कृषि व्यवसाय और ऊर्जा समाधान" बांस की खेती और बांस पौध की ऊतक संस्कृति पर प्रथाओं के वैज्ञानिक पैकेज पर परामर्श प्रदान करता है, साथ ही लाइन विभाग से रियायती दर पर ड्रिप सिंचाई प्रणाली, पुनर्खरीद व्यवस्था के लिए उद्योगों के साथ टाई अप की सुविधा आदि का लाभ उठाने में किसानों की मदद करता है। कोल्हापुर जिले में लवणता एक समस्या है, इसलिए किसानों ने अपनी बंजर भूमि को पुनः उपयोग में लाने के लिए श्री.वांड्रे से परामर्श करना आरंभ किया।

इचलकरंजी गांव, तालुक हटकानांगले, जिला कोल्हापुर के एक गन्ना उत्पादक निवासी श्री संजय खोट कहते है "गन्ना एक बारहमासी उष्णकटिबंधीय फसल है तथा इसे अधिक उर्वरक और पानी की आवश्यकता होती है। उर्वरक और पानी के अंधाधुंध उपयोग से, मेरी 1.5 एकड़ जमीन खारी हो गयी और पीएच 8.20 था। मैंने ईश्वर फर्म से परामर्श किया और मुझे जमीन पर बांस की खेती करने की सलाह दी गई।"

यह लगातार प्रयासों की सफलता का फल है कि, 100 से अधिक किसान "ईश्वर कृषि व्यापार और ऊर्जा समाधान" के नियमित ग्राहक बन गए हैं और अपनी बंजर भूमि पर बांस की खेती कर रहे हैं। सीमित श्रम शक्ति के साथ यह फर्म दिन पर दिन विस्तृत होती जा रही है। फर्म का सालाना कारोबार 10 लाख रुपये है। श्री वांड्रे कृषक समुदाय से कमाई के आश्वसत स्त्रोत के लिए उनकी बंजर भूमि पर बाँस की खेती करने की अपील करते हैं। उनके द्वारा साझा किए गए बांस की खेती और इसके लाभ के आंकड़े नीचे दिए गए हैं:- **तालिका -1: बांस की खेती के आंकड़े (1000 पौधों/एकड़)**

किसान का नाम	एकड़ की संख्या	उपज (टन)	कार्बन सीक्वेस्ट्रेशन (टन)	जैव ऊर्जा उत्पादन (मेगावाट/घंटा)
श्री. संजय रघुनाथ खोट	1.5	60	126	48
श्री. कृष्णाबल तुकाराम पाटिल	1.0	40	84	32
श्री. संजय अन्ना साहेब पदवाल	1.0	40	84	32
श्री. अर्जुन यशवंत मोरे	1.0	40	84	32
श्री. संदीप सी. होपडे	2.5	100	210	168

(स्रोत: ईश्वर कृषि व्यापार और जैव ऊर्जा समाधान)

तालिका -1 बड़े पैमाने पर किसानों को मिलने वाले लाभ के दर्शाता है। इसके अलावा बांस फसल से टनों में कार्बन सीक्वेस्ट्रेशन से क्षेत्र स्तर पर 'कार्बन क्रेडिट' अर्जित करना आसान बनाता है। बांस की खेती पर अधिक वैज्ञानिक जानकारी के लिए,

श्री.अरुण ईश्वर वांड्रे के मोबाइल पर संपर्क किया जा सकता है - 09422802750, 08625822433

उनकी ई - मेल आईडी: arun.wandre @ yahoo.com, ishwar.aqbs@ gmail.com

ISAP-पंजाब ने एग्री पेशेवरों तक बेहतर ढ़ंग से पहुंचने के लिए नए तरीकों की पहल

भारतीय एग्रीबिजनेस प्रोफेशनल्स सोसायटी (ISAP) भारतीय कंपनी अधिनियम की धारा 25 के तहत वर्ष 2001 में स्थापित एक गैर लाभकारी सरकारी संगठन है। ISAP कृषि में बड़े पैमाने पर परियोजनाओं और संबंधित क्षेत्रों के माध्यम से भारतीय कृषि समुदाय और विभिन्न अन्य हितधारकों अर्थात राज्य सरकारों, अंतरराष्ट्रीय संगठनों, द्विपक्षीय विकास एजेंसियां, कॉरपोरेट, शिक्षा और अंतिम उपयोगकर्ताओं के नेटवर्क के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करता है। ISAP ने हाल ही में कौशल विकास, डेयरी विकास और ग्रामीण स्वास्थ्य जैसे अन्य ग्रामीण विकास के क्षेत्रों में भी अपनी सीमाओं को फैलाया है। ISAP की पहुंच भारत के 15 राज्यों के 1500 गांवों, 49 ब्लॉक, 27 जिलों में है। अब तक, ISAP ने 2659 कृषि स्नातकों को उद्यमिता विकास प्रशिक्षण प्रदान किया और 715 सफल उद्यम तैयार किये हैं। यह मध्य प्रदेश के विदिशा जिले में सामुदायिक रेडियो स्टेशन "किसान वाणी सिरोंज," भी सफलतापूर्वक चला रहा है।

एसी और एबीसी योजना के साथ एसोसिएशन:

ISAP मैनेज के तत्वावधान के तहत 12 राज्यों में एसी और एबीसी योजना लागू कर रहा है। वर्ष 2006 के बाद से, ISAP-पंजाब ने इच्छुक एग्री पेशेवरों तक बेहतर ढ़ंग से पहुंचने के लिए एसी और एबीसी योजना के तहत नए तरीकों की पहल की। ISAP-पंजाब ने अब तक 12 बैचों के माध्यम से पंजाब के सभी जिलों से एग्री/संबद्ध क्षेत्रों से 409 इच्छुक कृषिउद्यमियों प्रशिक्षित किया है। कुल 138 कृषिउद्यमियों ने कृषि उद्यम स्थापित किया है और सफलतापूर्वक चला रहे हैं, इनमें से 44 कृषि उद्यम बैंक द्वारा वित्तपोषित परियोजना हैं, जबकि 94 ने अपने स्वयं के धन के साथ इसे स्थापित किया है। ISAP-पंजाब की प्रमुख गतिविधियों में से कुछ नीचे सूचीबद्ध हैं:

- भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, सीसीएस हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय-हिसार, राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय-बीकानेर, जीबी पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय-पंत नगर, इत्यादि को नई दिल्ली में मुख्यालय की मदद से भारत में प्रमुख संस्थाओं से कृषिउद्यमियों को ब्रीडर बीज उपलब्ध कराते हुए बीज उत्पादन व गुणन कार्यक्रम के माध्यम से खाद्य सुरक्षा को मजबूत बनाना।
- कृषिउद्यमियों के बीच नेटवर्क को मजबूत बनाने के लिए "पंजाब कृषिउद्यमी एसोसिएशन" की शुरुआत।
- नीदरलैंड सरकार के साथ सहयोग से जैविक खेती और फूलों की खेती पर प्रशिक्षण आयोजित करने करना।
- फूलों की पाक्षिक विपणन की सुविधा।

ISAP पंजाब के माध्यम से प्रशिक्षित कृषिउद्यमियों की मुख्य उपलब्धियाँ:

• श्री सरदार गुरशरण सिंह (PUN-0440) को सब्जियों की संरक्षित खेती में उनकी भूमिका के लिए नाबार्ड द्वारा 2013 में अपने स्थापना दिवस पर 'सर्वश्रेष्ठ कृषिउद्यमी' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होंने 200 से अधिक शुद्ध मकान, 12 पॉली हाउस, 200 किसान क्लब और पंजाब के 9 जिलों में 100 संयुक्त देयता समूह की स्थापना की है।

• श्री सरदार जसविंदर सिंह (PUN-0454) ने पंजाब में 3 जिलों के 150 किसानों के साथ अनुबंध खेती, के माध्यम से गेहूं की किस्म यानी फाउंडेशन एवं प्रमाणित बीज के लगभग 80 ट्रकों का उत्पादन किया। पूसा-1509 सुगंधित चावल किस्म का उत्पादन किया और इसे आंध्र प्रदेश के किसानों के साथ 60 एकड़ जमीन पर अनुबंधित खेती के माध्यम से बढ़ाया तथा पंजाब, हरियाणा, जम्मू एवं कश्मीर, उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश में विपणन किया।

• लगभग 40 प्रतिशत प्रशिक्षित कृषिउद्यमियों ने राष्ट्रीय बागवानी मिशन के माध्यम से राज्य सरकार से "कीड़े कम्पोस्ट इकाइयों" को स्थापित करने के लिए 30 हजार रुपए और "शेड नेट हाउस खेती" के लिए 50 हजार रुपए की सब्सिडी की सहायता राशि का लाभ उठाया।

• श्री हरकवंल सिंह (PUN-0660), एक इंटर पास, प्रशिक्षित कृषिउद्यमी एचओएल के साथ जो स्टीन Friesian नस्लों और Murrah भैंस की एक उच्च तकनीक डेयरी यूनिट चल रहा है, जो एटीएमए, नाबार्ड और डेयरी विकास बोर्ड के लिए एक "प्रदर्शन इकाई" के रूप में माना गया।

ISAP पंजाब को निम्न पते पर संपर्क किया जा सकता है:

श्री अनुज सूद, नोडल अधिकारी, भारतीय कृषि व्यवसाय पेशेवर (ISAP) सोसायटी,
18 1, प्रीत विहार, (GNDU, पुरानी चुंगी के पास) पीओ, रायन और सिल्क मिल्स, अमृतसर, पंजाब,
फोन: 09465078461

(श्री अनुज सूद, नोदाल अधिकारी)

"एग्री क्लीनिक एवं कृषि व्यापार केन्द्र योजना के तहत व्यापार के विस्तार क्षमताओं पर स्थापित कृषिउद्यमियों के लिए रिफ्रेशर प्रशिक्षण कार्यक्रम (आरटीपी-67)"

"एसी और एबीसी योजना के तहत व्यापार के विस्तार क्षमताओं पर स्थापित कृषिउद्यमियों" के लिए बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, रांची, झारखंड में 29-31 अक्टूबर, 2013 के दौरान एक रिफ्रेशर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल से तेईस कृषिउद्यमियों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। श्री के.सी. पांडा, मुख्य महाप्रबंधक, नाबार्ड ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। श्री के.सी. पाणिग्रही, डीजीएम, नाबार्ड, डा. आर.पी. सिंह रतन, निदेशक, एक्सटेंशन शिक्षा, बीएयू, रांची, डा. निवा बारा, विभागाध्यक्ष (एक्सटेंशन), बीएयू, रांची ने समारोह की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम की शुरुआत एसी और एबीसी योजना के संशोधित दिशा निर्देशों पर एक अभिविन्यास सत्र के साथ हुई। प्रतिभागियों ने अपने अनुभव बांटे, व्यापार में बाधाओं पर चर्चा की और भी व्यापार की समस्याओं के समाधान के लिए विचार विमर्श किया। उन्होंने कृषिउद्यमियों के बीच व्यापार नेटवर्किंग के विस्तार के परिणामस्वरूप होने वाले व्यापार के अवसरों पर भी चर्चा की।

श्री जेपी लाला, उप प्रबंधक (Rtd.), भारतीय स्टेट बैंक, और श्री एपी सिन्हा, मुख्य प्रबंधक (Rtd.), स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, रांची, जैसे विशेषज्ञ बैंकरों ने विस्तृत रूप से प्रस्तुत की परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) की छानबीन की और कृषिउद्यमियों को निर्देशित करने के साथ ही अपनी व्यक्तिगत डीपीआर दोबारा जमा करेने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रतिभागियों को कुछ मॉडल परियोजनाओं के साथ परियोजना तैयार करने पर विवरण वाली अध्ययन सामग्री, प्रदान की गई। रिफ्रेशर प्रशिक्षण कार्यक्रम की औसत रेटिंग 10 में से 9.72 था, जो कार्यक्रम के प्रभाव के बारे में समग्र प्रभाव का संकेत है। कार्यक्रम का समापन श्री ए वासुदेव राव, सलाहकार, सीएडी, मैनेज, हैदराबाद द्वारा आभार प्रदर्शन के साथ हुआ।

www.agriclinics.net वह पोर्टल है जो एसी तथा एबीसी योजना के बारे में सूचना प्रदान करता है। यह पोर्टल पात्रता मानदंडों, प्रशिक्षण संस्थानों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, सहायता कार्यों, वित्त विकल्पों तथा भावी उद्यमियों को सब्सिडी प्रदान करने के संबंध में अद्यतन जानकारी देता है।यह वेबसाइट स्थापित कृषि नव उद्यमों, लंबित परियोजनाओं, संबंधित योजनाओं के ब्यौरों से संबंधित सूचना तथा राज्य सरकारों, कृषि विश्वविद्यालयों, बैंकों, प्रशिक्षण संस्थानों तथा कृषि उद्यमियों के लिए उपयोगी अन्य सूचना भी प्रदान करती है।

एग्री क्लीनिकों तथा एग्रीबिजनेस केंद्रों के संबंध में अधिक स्पष्टीकरण के लिए कृपया इस पते पर मेल करें। indianagripreneur@manage.gov.in

"प्रत्येक कृषक द्वारा बेहतर कृषि"

'कृषि उद्यमी' का प्रकाशन
श्री बी श्रीनिवास, आईएएस,
महानिदेशक, मैनेज, हैदराबाद द्वारा किया जाता है।

प्रमुख संपादक : श्री वी. श्रीनिवास, आईएएस
संपादक : डा. पी. चंद्रशेखर
सहायक संपादक : डा. लक्ष्मीमूर्ति
: **सुश्री ज्योति सहारे**

हमें संपर्क करें
कृषि उद्यमिता विकास केंद्र (सीएडी) राष्ट्रीय कृषि प्रबंधन विस्तार संस्थान (मैनेज), राजेन्द्र नगर, हैदराबाद,
पिन–500030 आन्ध्र प्रदेश, भारत
हेल्पलाइन नं. : 1800 425 1556 (टोल फ्री)
ईमेल helplinecad@manage.gov.in
ई–मेल :indianagripreneur@manage.gov.in